# इकाई 15 बच्चों के लिए रेडियो

## इकाई की रूपरेखा


15.0 उद्देश्य
15.1 प्रस्तावना
15.2 प्रयोजन और प्रासंगिकता
15.3 श्रोताओं की पहचान
15.4 उपयुक्त विषय का चुनाव
15.5 लेखन की तैयारी
15.6 बच्चों के लिए लेखन और प्रस्तुति
15.6.1 बालोपयोगी भाषा
15.6.2 आवाज़ का महत्व
15.7 सारांश
15.8 बोध प्रश्नों के उत्तर


## 15.0 उद्देश्य

यह इकाई बच्चों के कार्यक्रम से संबंधित है। इसे पढ़ने के बाद आप :

- बच्चों के कार्यक्रम का उद्देश्य समझा सकेंगे,
- बच्चों के लिए बनाए जाने वाले कार्यक्रम के लिए उपयुक्त विषय का चुनाव कर सकेंगे,
- इस कार्यक्रम के विभिन्न क्षेत्रों को पहचान सकेंगे,
- विवेच्य कार्यक्रम के आलेख में अपनायी जाने वाली सावधानियों को रेखांकित कर सकेंगे,
- ऐसे कार्यक्रमों को तैयार करने की आवश्यक शर्तों का उल्लेख कर सकेंगे और उनका उपयोग कर सकेंगे।

## 15.1 प्रस्तावना

इकाई 14 में आपने शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका पर विचार किया। इस इकाई में हम बच्चों के लिए बनाये जाने वाले रेडियो कार्यक्रमों की चर्चा करने जा रहे हैं। इससे आपको इस प्रकार के कार्यक्रम तैयार करने में सहूलियत होगी।

बच्चों के लिए कार्यक्रम तैयार करने से पहले बतौर पूर्वपीठिका श्रोतावर्ग की पहचान और उसके अनुसार उपयुक्त विषय वस्तु का चुनाव कर लेना चाहिए। 3 वर्ष से ऊपर के बच्चे छोटी-छोटी बातें समझने लगते हैं। सत्रह वर्ष का बच्चा काफी हद तक परिपक्व अवस्था में पहुँच जाता है। वह खुद सोचने-समझने लगता है और उसमें निर्णय लेने की क्षमता आ जाती है। तीन से सत्रह वर्ष के बच्चे के लिए एक सा कार्यक्रम उपयुक्त नहीं होगा। तीन वर्ष का बच्चा कहानी सुनने में अधिक रूचि लेगा और सत्रह वर्ष का बच्चा विज्ञान या समाज विज्ञान में अधिक रूचि रख सकता है। अत: उसी के अनुसार विषय भी बदलते रहते हैं।

हमने इस इकाई में कहानी, कविता, अन्त्याक्षरी की चर्चा विशेष रूप से की है। यह सभी उम्र के बच्चों की मनपसन्द चीज है। हमने विज्ञान और समाज विज्ञान से संबंधित कार्यक्रमों पर अगली इकाई (स्कूल के लिए प्रसारण) में बातचीत की है।

इकाई के अंत में हमने रेडियो आलेख (बच्चों के कार्यक्रम संबंधी) तैयार करने के मूलभूत आधारों की चर्चा की है। कुछ उदाहरण और अभ्यास भी हमने दिए हैं, इसके आधार पर आप बच्चों के कार्यक्रम के लिए आलेख लिखना शुरू कर सकते हैं।

## 15.2 प्रयोजन और प्रासंगिकता

बच्चों के लिए कार्यक्रम बनाने से पहले आपके लिए यह जानना आवश्यक है कि इस प्रकार के कार्यक्रमों की उपयोगिता और प्रासंगिकता क्या है? वस्तुतः बच्चों के लिए बनाया जाने वाला रेडियो कार्यक्रम बच्चों की कल्पनाशक्ति को विकसित करता है और उन्हें अपनी क्षमता के अनुरूप सोचने-समझने के लिए मजबूर करता है।

आपके घर में भी बच्चे होंगे। अगर आपके घर में नहीं हैं, तो पड़ोस के घर में बच्चे होंगे। आप उनकी गतिविधियों का ध्यान से अवलोकन करें। आप पाएँगे कि नयी चीज के प्रति उनके मन में एक उत्सुकता का भाव होता है। नयी चीज को देखते ही वह पूछ बैठता है—यह क्या है? यह क्यों है? यह कैसे चलता है? इस क्या, क्यों और कैसे का जबाब देते-देते आप कभी-कभी थक भी जाते होंगे, कभी ऊब भी महसूस करते होंगे। आप ऊबें नहीं, बच्चों के सवालों का जवाब सरल से सरल ढंग से दें। रेडियो पर बच्चों के लिए कार्यक्रम बनाते समय भी आपके सामने यही समस्याएँ आएँगी। लेकिन आपके सामने कोई बच्चा नहीं होगा। आपको उसके प्रश्नों, उसकी जिज्ञासाओं की खुद कल्पना करनी होगी और हल भी आपको ही ढूँढना होगा।

वस्तुतः बच्चों के लिए बनाए जाने वाले कार्यक्रमों में बाल मन की जिज्ञासाओं और उनके समाधान का समावेश अवश्य होना चाहिए। अतः प्रश्नोत्तरी शैली इसके लिए बेहतर होती है।

## 15.3 श्रोताओं की पहचान

इससे पहले की इकाई (इकाई14) में हमने आपको बताया था कि रेडियो लेखन के लिए श्रोतावर्ग की पहचान करना अति आवश्यक है। बच्चों के लिए कार्यक्रम तैयार करते समय भी इस बात को ध्यान में रखना चाहिए। आमतौर पर बच्चों को निम्नलिखित कोटियों में विभक्त किया जा सकता है :

3 से 6 वर्ष के बच्चे
7 से 10 वर्ष के बच्चे
11 से 14 वर्ष के बच्चे
15 से 17 वर्ष के बच्चे

यह एक प्रकार का स्थूल विभाजन है, जो कार्यक्रम बनाने की सुविधा के लिए किया जाता है। यह संभव है कि 6 वर्ष का बच्चा 7 से 10 वर्ष के बच्चों की आयु वर्ग के लिए तैयार किए गए कार्यक्रम को समझ ले और उसमें रुचि ले।

## 15.4 उपयुक्त विषय का चुनाव

आप पहले यह निश्चित कर लें कि आपको किस आयु वर्ग के बच्चों के लिए कार्यक्रम बनाना है। इसके बाद दूसरा चरण होता है, उपयुक्त विषय का चुनाव। पर किसी भी वर्ग के बच्चे के लिए कार्यक्रम बनाते समय आप उसे सीधे तौर पर न रख दें, बल्कि कहानियों और नीतिकथाओं के माध्यम से विषयवस्तु को समझाने की कोशिश करें। पंचतंत्र इसका उत्तम उदाहरण है। एक राजा के चार लड़के थे। वे पढ़ाई से दूर भागते थे। कोई भी शिक्षक उन्हें पढ़ाने में सक्षम नहीं हुआ। तभी विष्णु शर्मा नाम के एक शिक्षक ने उन बच्चों को पढ़ाने का जिम्मा लिया। पर उन्होंने सीधे तौर पर उन राजकुमारों को शिक्षा देनी शुरू नहीं की, बल्कि पशु पक्षी की कहानियों के माध्यम से उन्हें शिक्षा दी। वे उन राजकुमारों को कहानियाँ सुनाते थे और अन्त में उनसे प्रश्न पूछते थे। कभी राजकुमार उत्तर देने में सफल होते थे कभी नहीं। अन्त में शिक्षक विष्णु शर्मा उन राजकुमारों को कहानी का प्रतिपाद्य बताते थे और उनकी जिज्ञासाओं को शांत करते थे।

रेडियो में भी यही विधि अपनाई जानी चाहिए। पर यहाँ एक अन्तर यह होता है कि विद्यार्थी आँखों के सामने नहीं होता, अतः उसकी जिज्ञासाओं और उसके प्रश्नों की कल्पना

भी कार्यक्रम निष्पादक को खुद करनी पड़ती है और उसका हल भी बताना होता है। आप बच्चों को स्टूडियो में भी बुला सकते हैं। और उनसे सवाल-जवाब के माध्यम से कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकते हैं।

यह तो हुई प्रस्तुति की बात। आप बच्चों के लिए विषय का चुनाव कैसे करेंगे। आप ठीक सोच रहे हैं। आपको पहले श्रोतावर्ग निश्चित करना होगा। अगर आप 3 से 6 वर्ष के बच्चे के लिए कार्यक्रम बना रहे हैं, तो आप छोटी-छोटी और सरल कहानियाँ, चुटकुले आदि का सहारा लें। इस आयुवर्ग के बच्चों को जानवरों की कहानियों से बड़ा लगाव होता है। आप अगर शेर, भालू, साँप, चिड़िया की कहानी सुनाएँगे, तो बच्चे उससे काफी प्रभावित होंगे। कहानी के अंत में आप कहानी का सार और सीख का हवाला देना न भूलें क्योंकि यही हमारा मूल उद्देश्य है। कहानी सुनाना तो इस उद्देश्य पूर्ति का एक माध्यम भर है। इसका एक उदाहरण आपके सामने रखा जा रहा है–

**एक घना जंगल था। उस जंगल में तरह-तरह के जानवर और पक्षी रहते थे। भालू, शेर, चीता, गैंडा, तोता, मैना, मोर और भी कई जानवर और पक्षी थे। उसी जंगल में एक बड़ा बदमाश साँप रहता था। उसका नाम था झगड़ू। क्या नाम था–झगड़ू। वह बड़ा बदमाश था। वह जानवरों को बहुत तंग किया करता था। कभी किसी जानवर के बच्चे को खा जाता था, कभी मधुमक्खी के छत्ते से शहद निकालकर पी जाता था। सभी जानवर उससे परेशान थे। एक दिन की बात है, एक मधुमक्खी को बड़ा गुस्सा आया। उसने साँप से बदला लेने की सोची। एक जगह साँप आराम से सोया हुआ था। अरे, वही झगड़ू साँप जो बड़ा बदमाश था। मधुमक्खी उस साँप के पास गयी और उसे जोर से काट खाया। वह उसे तब तक काटती रही, जब तक साँप बेहोश नहीं हो गया। जब साँप को होश आया तो वह अपनी माँ के पास रोता-रोता गया–ऊँ, ऊँ, ऊँ, ऊँ, माँ, माँ। मुझे मधुमक्खी ने काट खाया, ऊँ, ऊँ, अरे, चुप। पहले यह बता कि क्यों काटा उस मधुमक्खी ने? तूने जरूर कोई शैतानी की होगी। साँप की माँ बोली। नहीं, माँ, मैंने कोई बदमाशी नहीं की। तभी मधुमक्खियाँ वहाँ पहुँच गईं। उसने साँप की बदमाशी का सारा किस्सा उसकी माँ को सुना दिया। साँप की माँ ने उसे खूब डाँटा। झगड़ू साँप रोने लगा। उसने कहा, माँ मैं कभी बदमाशी नहीं करूँगा।**

**इसके बाद साँप बहुत भला और अच्छा बन गया। अब वह जानवरों को तंग नहीं करता था।**

**अच्छा बच्चो बताओ इस कहानी से क्या सीख मिली। हाँ, इस कहानी से यह सीख मिली कि बच्चों को शैतानी नहीं करनी चाहिए। शैतानी करने पर कोई उन्हें प्यार नहीं करता। अच्छे बच्चो को सभी प्यार करते हैं।**

बड़े आयु वर्ग जैसे 6 से 11 वर्ष के बच्चों के लिए भी पशु-पक्षियों की कहानियाँ तैयार की जा सकती हैं। पर वे कहानियाँ थोड़ी लम्बी और थोड़ी गूढ़ार्थ वाली भी हो सकती हैं। इसके माध्यम से उन्हें विज्ञान, समाज विज्ञान और इतिहास की साधारण जानकारी भी दी जा सकती है। जैसे, उन्हें रानी झांसी, शिवाजी, नेहरू, गांधी की कहानी सुनाई जा सकती है। किसी वैज्ञानिक की जीवनी से भी परिचित कराया जा सकता है। 11 वर्ष से बड़े बच्चों को यही बातें विस्तार के साथ बताई जा सकती हैं।

**बोध प्रश्न**

1) नीचे कुछ कथन दिये जा रहे हैं, सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत के आगे (×) का निशान लगाइए।

   क) बच्चों के कार्यक्रम में कहानियों का समावेश किया जाना चाहिए। ( )

   ख) बच्चे कहानियों में रुचि नहीं रखते ( )

   ग) 3 से 6 वर्ष के बच्चे विज्ञान में बड़ी रुचि रखते हैं। ( )

   घ) 6 से 11 वर्ष के बच्चों को नेहरू, गांधी की कहानी सुनाई जा सकती है। ( )

2) रेडियो प्रस्तुति की दृष्टि से बच्चों को कितने वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। उनका उल्लेख करें। (उत्तर तीन पंक्तियों में दें)

   .....

..........................................................................................

..........................................................................................

3) बच्चों के लिए कार्यक्रम बनाते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

**अभ्यास**

1) आप 3 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए कहानी लिखें, जिसे रेडियो पर प्रसारित किया जा सके। कहानी पशु-पक्षी से संबंधित होनी चाहिए।

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

2) पंडित जवाहरलाल नेहरू या महात्मा गांधी की जीवनी के बारे में बच्चों का कार्यक्रम तैयार करें। यह कार्यक्रम छह वर्ष के ऊपर के बच्चे के लिए तैयार करें।

## 15.5 लेखन की तैयारी

बच्चों के कार्यक्रम के लिए आलेख तैयार करना एक चुनौती भरा काम है। आप यह तो जानते ही हैं कि लेखन की तैयारी के पूर्व श्रोता की पहचान और उपयुक्त विषय का चुनाव कर लेना होता है। हम यह मानकर चल रहे हैं कि आपने श्रोतावर्ग की पहचान कर ली है और उपयुक्त विषय का चुनाव भी कर लिया है। अब उस विषय को लिखने का समय आ गया है। आप जानते हैं कि रेडियो में जो भी प्रसारण होता है, वह पहले से लिखा होता है। अतः इस दृष्टि से रेडियो लेखन का महत्त्व बढ़ जाता है।

आप किसी भी विषय को चुनें, आपकी शुरुआत आकर्षक होनी चाहिए। आपके आलेख की संरचना ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चों के मन में कुतूहल उत्पन्न हो। इसके अतिरिक्त आपकी भाषा स्पष्ट होनी चाहिए, वाक्य छोटे-छोटे और सरल होने चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपने कार्यक्रम में कुशल और रेडियो के अनुकूल आवाज़ का सहारा लेना चाहिए, क्योंकि आवाज़ रेडियो का एकमात्र माध्यम है जिससे वह श्रोताओं को सबसे पहले आकृष्ट करता है। एक उदाहरण हम यहाँ दे रहे हैं। हम यहाँ बच्चों की एक कविता उद्धृत कर रहे हैं।

**दादी अम्मा**

दादी अम्मां, मुझे बताओ,
नीचे ही गिरता क्यों फल?
धुआँ सदा ऊपर क्यों जाता है?
नीचे गिरती गेंद उछल।

दादी अम्मां, मुझे बताओ,
कैसे बनते हैं बादल?
कौन उन्हें देता है बिजली?
कौन उन्हें देता है जल?

छोटे बच्चों की कविता का एक और नमूना देखिए–

**चाँद, तारे और सूरज**

चाँद ने जो आँखें खोलीं
चाँद में से बुढ़िया बोली–

दिन बीता अब होती शाम
बच्चो अब कर लो आराम।

तारों ने जो नयना खोले
झिलमिल करके ऐसे बोले–

रात हुई अब हम लोरी गाते
बच्चे बिस्तर में सो जाते।

सूरज ने जो आँखें खोलीं
सूरज की किरणें यों बोलीं–

सुबह हुई अब बीती शाम
चल दो, बच्चो, करने काम।।

इन दोनों कविताओं को आप ध्यान से पढ़ें। आपको महसूस होगा कि पहली कविता में बच्चे के मन में उठने वाली सहज जिज्ञासाओं को आधार बनाया गया है और दूसरी कविता में लोक कथा को आधार बनाया गया है। इस दृष्टि से ये दोनों ही कविताएँ अच्छी हैं, ये दोनों कविताएँ बच्चों को आकर्षित करेंगी, क्योंकि इसमें बाल-मन का अंकन हुआ है। इसी तरह की सरल और आकर्षक कविताएँ रेडियो पर प्रसारित की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त जानवर और पक्षियों से संबंधित कविताएँ भी बच्चों को खूब पसन्द होती हैं। एक-दो उदाहरण आप देखें–

**बंदरवाला**

देखो बंदरवाला आया।
डम-डम डमरू खूब बजाया।
एक बंदरिया और बंदर को
इसने सुन्दर नाच नचाया।।
बंदर की है टोपी कैसी?
बंदरिया बनी दुल्हनिया जैसी।
दोनों छम-छम नाच रहे हैं।
सबसे पैसा माँग रहे हैं।

**हाथी आता झूम के**

हाथी आता झूम के।
धरती-मिट्टी चूम के।
कान हिलाता पंखे जैसा
देखो मोटा ऊँचा कैसा?
सूंड हिलाता आता है।
गन्ना पत्ती खाता है।

हाथी के दो लम्बे दाँत,
सूंड बनी है इसके हाथ।
इससे ही यह लेता रोटी
आँखें इसकी छोटी-छोटी।।

प्रकृति संबंधी कविताएँ--

**बादल आया**

बादल आया झूम के
पर्वत चोटी चूम के
इन्द्रधनुष का पहने हार
ले आया वर्षा की धार

मेंढ़क राजा मगन हुए
झींगुर के सुख सपन हुए
कजरी की धुन आती है,
नन्हीं चिड़िया गाती है।

**बच्चों की कहानियाँ**

बच्चों को कहानी सुनाने की परम्परा उतनी ही पुरानी है जितनी मानव सभ्यता। ऐसा माना जाता है कि जब आदिम युग में पुरुष शिकार की तलाश में दूर चले जाते थे और रात-रात भर घर नहीं लौटते थे तो घर की बूढ़ी महिलाएँ समय काटने के लिए बच्चों को किस्से और कहानियाँ सुनाती थीं। उनका तरीका इतना रोचक होता था कि बच्चे उत्सुकता और आश्चर्य से उन्हें निरंतर सुनते रहते थे। किस्से और कहानियों की एक विशेषता यह होती है कि वे कभी बासी नहीं होतीं और जो कहानी बच्चे को पसंद आ जाती है उसे वे बार-बार सुनने का आग्रह करते हैं। इसका क्या करण है? वस्तुत: परी-कथाओं और लोक-कथाओं की प्रमुख विशेषता होती है--जिज्ञासा पैदा करने का गुण। कभी न समाप्त होने वाली जिज्ञासा। यही जिज्ञासा बच्चों को कहानी की ओर खींचती है।

कहानी सुनाने में विषय वस्तु के साथ-साथ प्रस्तुति का भी महत्त्व होता है। परी-कथाएँ और लोक-कथाएँ पढ़ने में बच्चों को उतना आनन्द नहीं आता, जितना सुनने में। कहानी सुनाने के अंदाज से कहानी का महत्व बढ़ जाता है। इसमें आवाज़ के उतार-चढ़ाव और टोन की बड़ी भूमिका होती है। यदि गुस्से की बात है, तो वहाँ गुस्सा झलकना चाहिए। दुख की बात बताते समय किस्सागो की आवाज़ उसी के अनुसार बदल लेनी चाहिए।

कहानी बच्चों में उत्साह पैदा कर रही है या नहीं इसका पता बच्चों के "हुँकारे" से लगता है। बच्चे कहानी सुनते समय हाँ, हूँ करते रहते हैं। अगर कहानी कहने वाला थोड़ी देर रुक जाता है, तो वे पूछ बैठते हैं कि इसके बाद क्या हुआ? रेडियो में यह पता नहीं चल सकता कि सुनाई गई कहानी का बच्चे पर क्या असर पड़ा। इसलिए आमतौर पर ऐसे कार्यक्रमों में बच्चों को स्टूडियो में बुला लिया जाता है। वे कहानी सुनते समय अपनी "प्रतिक्रिया" व्यक्त करते चलते हैं।

आप रेडियो पर कछुए और खरगोश की दौड़ प्रतियोगिता की कहानी सुना सकते हैं। उस घमंडी शेर की कहानी सुना सकते हैं, जो जानवरों को खा जाता था। चालाक खरगोश उसे कुएं के पास ले गया। वहाँ शेर को उसकी परछाईं दिखाकर उसे कुएं में कूदने के लिए मजबूर किया।

**अन्त्याक्षरी**

अन्त्याक्षरी भी बच्चों का एक प्रिय कार्यक्रम है। यह कार्यक्रम दुहरा कार्य करता है। एक तरफ तो यह बच्चों का मनोरंजन करता है और दूसरी तरफ उनकी स्मरण शक्ति भी तेज होती है। अन्त्याक्षरी के लिए बच्चे तैयारी करके आते हैं, ढेर सारी कविताएँ उन्हें याद हो जाती हैं। अत: यह मनोरंजन के साथ-साथ शैक्षिक कार्यक्रम भी है।

आप अन्त्याक्षरी स्टूडियो में आयोजित कर सकते हैं। इसे आयोजित करने से पहले आप बच्चों की जाँच अवश्य कर लें कि उन्हें कविताएँ याद हैं या नहीं और उन्हें निर्देश भेज दें कि वे कविता याद करके आएँ। अगर आप रेडियो स्टेशन से नहीं जुड़े हुए हैं तो आप अपने मोहल्ले के बच्चों को इकट्ठा कर अन्त्याक्षरी आयोजित कर सकते हैं।

3) आप ऊपर दी गई कविताओं को अपनी आवाज में इसे टेपरिकार्डर में टेप करें और खुद देखें कि आप इसे प्रभावशाली ढंग से पेश कर पा रहे हैं या नहीं।

## 15.6 बच्चों के लिए लेखन और प्रस्तुति

बच्चों के कार्यक्रम के लिए आलेख तैयार करना एक चुनौती भरा काम है। इसके लिए आपको कभी संवाद शैली अपनानी पड़ेगी, कभी नाटकीय शैली, कभी कहानी की शैली। आपकी भाषा भी ऐसी होनी चाहिए जिसे बच्चे अच्छी तरह समझ सकें।

बच्चों के लिए लिखे गए रेडियो नाटकों की सफलता प्रभावी संवाद लेखन पर निर्भर है। संवाद कथानक को साकार और सजीव बनाने के साथ-साथ पात्रों के चरित्रों को भी सामने रखते हैं। संवाद लिखते समय वाक्य और शब्द योजना पर विशेष ध्यान देना चाहिए। संवाद में स्वाभाविकता, संक्षिप्तता और बिम्ब निर्माण करने की क्षमता होनी चाहिए।

रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभाव का भी काफी महत्त्व है। पक्षियों का कलरव, आँधी-तूफान, दरवाजों की आवाज, रेलगाड़ी, हवाई जहाज आदि की आवाज में संयोजन की प्रमुख भूमिका होती है।

संगीत भी एक तरह का ध्वनि प्रभाव है। रेडियो नाटक में संगीत का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों से होता है।

- आरंभ, अंत और दृश्य परिवर्तन
- देश तथा काल का संकेत
- व्यक्तित्व परिचय
- वातावरण निर्माण

### 15.6.1 बालोपयोगी भाषा

आप जानते हैं कि बच्चों के पास एक सीमित शब्दावली होती है। इसके अतिरिक्त उनकी विश्लेषण क्षमता और तथ्यों को आत्मसात् करने की शक्ति भी कम होती है। अतः बच्चों के लिए लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें–

- बच्चों के लिए लिखें, प्रायोजकों के लिए नहीं।
- बच्चों को बिल्कुल अज्ञानी समझकर न लिखें।
- विषयवस्तु में आश्चर्य, साहस और शौर्य को प्रमुखता दें।
- ऐसे शब्दों और ध्वनियों का प्रयोग करें जिनसे बच्चे स्वयं बिम्ब निर्माण कर सकें।
- कथानक में गति और ऐक्शन अधिक से अधिक हो।
- संवाद छोटे और चुटीले हों।
- आयु समूह का हमेशा ध्यान रखें।

### 15.6.2 आवाज का महत्त्व

आवाज रेडियो का प्रमुख औजार है। बच्चों के लिए बनाए जा रहे कार्यक्रम में इसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है। बच्चों के लिए रेडियो प्रसारण में "मौलिक विचारों" की उतनी आवश्यकता नहीं होती, जितनी "मौलिक प्रस्तुतीकरण" की होती है। बच्चों के कार्यक्रम में प्रश्नों का अवश्य समावेश करें। यहाँ प्रश्न भी खुद बनाने पड़ते हैं और उनका जवाब भी खुद ही देना पड़ता है। आप बाल मन की कल्पना खुद करें और अपनी आवाज में उतार-चढ़ाव लाकर बच्चों को आकृष्ट करें।

**बोध प्रश्न**

4) बच्चों के लिए रेडियो कार्यक्रम बनाते समय क्या सावधानियाँ अपेक्षित हैं? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए).

.....

.....

.....

.....

.....

5) कहानियाँ बच्चों को क्यों पसंद होती हैं? (सही उत्तर के सामने सही (✓) का और गलत उत्तर के सामने (✗) का निशान लगाइए)

क) कहानी बच्चों में जिज्ञासा उत्पन्न करती है। ( )

ख) कहानी में कथा तत्व नहीं होता। ( )

ग) कहानियाँ उबाऊ होती हैं। ( )

घ) कहानियाँ रोचक होती हैं। ( )

6) बच्चे कैसी कविताएँ पसन्द करते हैं? (सही उत्तर के सामने (✓) का निशान लगाइए)

क) पशु-पक्षियों से संबंधित ( )

ख) सामाजिक यथार्थ से संबंधित ( )

ग) सहज प्राकृतिक कविताएँ ( )

घ) छायावादी कविताएँ ( )

7) बच्चों के लिए लिखते समय भाषा और प्रस्तुति संबंधी किन-किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

8) रेडियो प्रसारण में आवाज के महत्त्व पर प्रकाश डालिए (तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

.....

.....

.....

## 15.7 सारांश

आपने इस इकाई में बच्चों के लिए रेडियो कार्यक्रम बनाने और उनके लिए आलेख तैयार करने संबंधी कुछ जानकारियाँ प्राप्त कीं।

- रेडियो बच्चों के मनोरंजन और उन्हें शिक्षा प्रदान करने का प्रमुख साधन है।
- इस प्रकार के कार्यक्रमों से बच्चों की कल्पनाशक्ति विकसित होती है और उनकी सोचने-समझने की क्षमता बढ़ती है।
- बच्चों के लिए बनाये जाने वाले कार्यक्रमों में श्रोतावर्ग की पहचान कर उपयुक्त विषय का चुनाव कर लेना चाहिए।
- बच्चों को पशु-पक्षियों से संबंधित कहानियाँ, कविताएँ और नाटक बहुत पसंद होते हैं। आप इन्हें कार्यक्रम में अवश्य शामिल करें।
- बच्चों के लिए लिखते समय विषय वस्तु में रोचकता, आश्चर्य, कुतूहल, साहस और शौर्य का अवश्य समावेश करें।

- रेडियो प्रस्तुति में आवाज का बड़ा महत्त्व होता है। आवाज के माध्यम से आप बच्चों के कार्यक्रम को आकर्षक बना सकते हैं।

## 15.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) क) ✓ ख) × ग) × घ) ✓

2) देखिए 15.3

3) प्रश्नों का अनुमान, बच्चों की जिज्ञासा का उत्तर, कहानी शैली का अधिक से अधिक प्रयोग आदि। (देखिए 15.2)

4) भाषा सहज और सरल हो, आवाज आकर्षक हो, कार्यक्रम में कुतूहल उत्पन्न करने की शक्ति हो आदि। (देखिए 15.5)

5) क) ✓ ख) × ग) ✓ घ) ✓

6) क) ✓ ख) × ग) ✓ घ) ✓

7) भाषा सरल होनी चाहिए, संवाद छोटे-छोटे होने चाहिए, कथानक में ऐक्शन और गति होनी चाहिए आदि। (देखिए 15.6.1)

8) देखिए 15.6.2